पीएस(डी)६-२/२००४

२१ अप्रैल, २००५

विषयः पाठ्यक्रम (सिलेबस) सुधार, भाषाओं के संदर्भ में

स्कूली शिक्षा के विभिन्न विषयों के पाठ्यक्रम का लगातार विश्लेषण और संवर्धन राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान प्रशिक्षण परिषद् (एन.सी.ई.आर.टी.) के नियमित कामों और उत्तरदायित्वों का हिस्सा है। यह काम परिषद् के उस मुख्य उद्देश्य को प्रतिबिंबित करता है जिसके तहत वह शैक्षिक सुधारों और पाठ्यचर्या के आधुनिकीकरण के प्रति समर्पित शोध संस्थान के रूप में काम करती हैं। हाल के महीनों में शैक्षिक सुधार की दिशाएँ तय करने से संबंधित ज्ञान मीमांसीय और शिक्षण शास्त्रीय मुद्दों पर राष्ट्रीय पाठ्यक्रम फ्रेमवर्क की समीक्षा के सिलसिले में विस्तृत विचार हुआ है। राष्ट्रीय स्टीयरिंग समिति, जिसके अध्यक्ष प्रोफेसर यशपाल हैं, और २१ राष्ट्रीय फोकस समूह, जिनकी अध्यक्षता जाने-माने विद्वानों ने की, स्कूली शिक्षा के विभिन्न आयामों व समस्याओं पर विचार करते रहे हैं। यह विचार ज्ञान की प्रकृति और कक्षा में शिक्षण व सीखने की प्रक्रिया को लेकर हुआ। प्रांतीय परिसंवादों, बैठकों, परिषद् की वेबसाइट और प्रसार माध्यमों के जरिये विभिन्न संस्थाओं और सामान्य जन की विस्तृत भागीदारी पूरे देश में सम्भव हुई। विचार-विमर्श का एक महत्त्वपूर्ण आयाम संवैधानिक मूल्यों, भारत की सांस्कृतिक विविधता तथा राष्ट्रीय अस्मिता के विकास से संबंधित नीतिगत उद्देश्य को पाठ्यचर्या से जोड़ना था।

इस प्रक्रिया का फोकस हमारी व्यवस्था के सभी स्तरों पर बच्चों व शिक्षकों द्वारा महसूस किया जाने वाला पाठ्यचर्या का बोझ है। यही विषय मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा १९९१ में बनाई गई यशपाल समिति को दिया गया था जिसकी रिपोर्ट परिषद् द्वारा १९९३ में प्रकाशित की गई थी। इस रिपोर्ट की दृष्टि में बच्चों तथा अध्यापक द्वारा महसूस किया जाने वाले बोझ का मुख्य कारण ज्ञान को सूचना मानने की प्रवृत्ति है। यह प्रवृति पाठ्यक्रम और पाठ्य पुस्तक निर्माण के साथ-साथ अध्यापन और परीक्षा प्रणाली में भी झलकती है। इस समिति की सिफारिशें और अन्य रिपोर्टों में की गई चर्चा अब सभी विषयों के पाठ्यक्रम (सिलेबस) की ताजी समीक्षा की मांग करती है। विभिन्न स्तरों पर हरएक विषय के पाठ्यक्रम में क्या परिवर्धन किया जाए जिससे बच्चों पर पड़ने वाला बोझ कम हो और पढ़ाई एक आनन्दपूर्ण अनुभव बन सके, यही प्रश्न सिलेबस में परिवर्धन की सिफारिशों के केन्द्र में होना चाहिये।

पिछले वर्ष परिषद् ने सभी विषयों की पाठ्य पुस्तकों की परीक्षा करने के लिए त्वरित समीक्षा समितियाँ बिठाई थीं और इस वर्ष के आरंभ में सभी विषयों के पाठ्यक्रमों की समीक्षा करने के लिए आन्तरिक समितियाँ बिठाई गई थी। इन समूहों की रिपोर्टें उपलब्ध हैं। राष्ट्रीय फोकस समूह की ड्राफ्ट रिपोर्टें भी आ चुकी हैं। यह आवश्यक है कि सिलेबस सुधार समितियाँ इन सभी स्रोतों से उपलब्ध अन्तर्दृष्टि का लाभ उठाएँ। पाठ्यक्रम के बोझ के संदर्भ में जिन मुख्य बातों को ध्यान में रखा जाना है, वे इस प्रकार हैंः

1. विषय वस्तु के सभी बिन्दुओं और अन्तर्वस्तु का बच्चों के मनोवैज्ञानिक विकास के विभिन्न चरणों से संबंध होना चाहिए।
2. भारत के संविधान में निर्दिष्ट मूल्य सभी विषयों के ज्ञान के संयोजन में गहराई से पिरोये जाने चाहिए।
3. एक स्तर और अगले स्तर के बीच में निरंतरता।
4. स्कूल के विभिन्न विषयों के बीच जुड़ाव होना चाहिए, भले ही ये अलग-अलग अनुशासनों से संबंधित हो।
5. विभिन्न विषयों के स्कूली ज्ञान और बच्चों के रोजमर्रा के अनुभवों और उनसे मिलने वाले ज्ञान के बीच मजबूत कड़ियाँ होनी चाहिये।

6. पर्यावरण संबंधी ज्ञान और चिन्ता सभी स्तरों और सभी विषयों में समाई होनी चाहिए। पर्यावरण की अवधारणा में प्रकृति, सभी प्रकार का जीवन, मानवीय मूल्य और पर्यावरण के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक अर्थ शामिल हैं।
7. लिंगसमानता, शांति, स्वास्थ्य, और विकलांग बच्चों की विशेष आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशीलता।
8. काम और श्रम की प्रतिष्ठा का मूल्य और कौशल हर स्तर पर सभी विषयों में शामिल हों।
9. कलात्मक दृष्टि और मूल्यों को प्रोत्साहित करने के लिए कलाओं और पारम्परिक दस्तकारी का पाठ्यक्रम में समावेश।
10. स्कूल और कालेज के पाठ्यक्रम में अन्तर्संबंध, जिस से दोहराव से बचा जा सके।
11. शैक्षिक टैक्नोलॉजी, जिसमें नई सूचना टैक्नोलॉजी शामिल है, की सामर्थ्य का हर विषय में उपयोग।
12. ज्ञान के सभी क्षेत्रों में बच्चे द्वारा उसकी रचना में लचीलेपन, ज्ञानमीमांसीय सक्रियता व सृजनशीलता को प्रोत्साहित करना।

परिषद् द्वारा इस समय जिन विषयों में पाठ्य पुस्तकें तैयार की जाती है, उन सभी के लिए वर्तमान पाठ्यक्रम की सभी स्तरों पर समीक्षा करने के लिए समितियाँ बनाई जा रही हैं। भाषा की पढ़ाई के लिए एक बहुभाषीय समिति गठित की जा रही है, जिसमें हिंदी, संस्कृत, उर्दू और अंग्रेजी सभी से संबंधित विशेषज्ञ और अध्यापक रहेंगे। यह समिति कक्षा १ से कक्षा १२ तक के भाषा संबंधी पाठ्यक्रम की विस्तृत समीक्षा कर के सुधारों की भाषा के क्षेत्र में इन बातों को ध्यान में रखते हुए पाठ्यक्रम (सिलेबस) की पुनर्रचना कैसे की जाये, यह तय करने के लिये हिन्दी, उर्दू, संस्कृत और अंग्रेजी को एक साथ रखकर एक समिति बनाई जा रही है जो अपनी सिफारिशें हरेक स्तर के लिये कक्षावार देगी। अन्य समितियों की तरह इस समिति की अनुशंसाएँ मई के अंत तक दे दिये जाने की अपेक्षा है। यह काम परिषद् के पाठ्यक्रम समूह के तहत किया जाएगा। पाठ्यक्रम समूह के अध्यक्ष की सहायता के लिए डॉ. जया सिंह (सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग), डॉ. गगन गुप्ता (विज्ञान एवं गणित विभाग), डॉ. अंजनी कौल (विज्ञान एवं गणित विभाग), और डॉ. स्वर्णा गुप्ता (प्रारंभिक शिक्षा विभाग) नियुक्त किए गए हैं। प्रबन्ध में मदद के अलावा ये सभी विभिन्न विषयों की समितियों की बैठकों में भाग ले सकेंगे। मुख्य सलाहकार की सहमति से समिति किसी विशेषज्ञ या शिक्षक को परामर्श के लिए आमंत्रित कर सकती है।

निदेशक

प्रोफेसर रामजन्म शर्मा
प्रभारी अधिकारी (हिंदी प्रकोष्ठ)

प्रोफेसर सविता सिन्हा,
अध्यक्ष, साविमाशिवि,

प्रोफेसर एम.ए.खादर,,
अध्यक्ष, पाठ्यक्रम समूह,